Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editors
Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editor : Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

© : Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

ISBN : 978-93-83634-38-5

Edition : 2018

Rs. : 350/-

Publisher : Bhagwaan Mahaveer International Research Center
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by :

प्रेक्षाध्यान का महाविद्यालयी छात्राओं की सृजनात्मक क्षमताओं पर प्रभाव का अध्ययन

*****

*डॉ. अशोक भास्कर

सारांशिका

बालक में सृजन की मौलिक क्षमता होती है। इसके लिए केवल उचित वातावरण एवं परिस्थितियां देने की आवश्यकता है। प्रारम्भ में भले ही उनके द्वारा सृजित वस्तु चित्र, आकृति आकर्षक न हो पर कालान्तर में अपने कौशलों को विकसित कर एक दिन वे सिद्धहस्त हो सकते है। ऐसा अवश्य है कि सभी में एक जैसी सृजन की दक्षता न हो, पर मौलिक सृजन दक्षता सभी में होती है। इसे समय–समय पर विकसित करने की आवश्यकता होती है। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया है कि अधिक बुद्धिमान तथा सामान्य बुद्धि वाले बच्चों में भी उच्च तथा निम्न दोनों स्तर की सृजनात्मकता बुद्धि पाई जा सकती है। प्रस्तुत शोध पत्र में सृजनात्मक क्षमता पर ध्यान के प्रभाव को देखा गया है। उद्देश्य की पूर्ति हेतु जैन विश्वभारती संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की स्नातक स्तर की 50 छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रयोज्य छात्राओं को प्रेक्षाध्यान का अभ्यास दो माह तक करवाया गया। सृजनात्मक क्षमता को मापने हेतु के.एन. शर्मा (2011) की अभिसारी उत्पादन योग्यताएं परीक्षण मापनी का उपयोग किया गया। सांख्यकीय विश्लेषण के अनुसार शोध के लिए बनाई गई परिकल्पना चढ़ 0.05 एवं चढ़ 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध हुई।

सम्बद्ध शब्द : *प्रेक्षाध्यान, सृजनात्मक क्षमता*

---

*सहायक आचार्य, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं 341306 (राजस्थान)